# भगवान की आरती क्यों?

निर्मला गुप्ता

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति का बड़ी गहरायी से अध्ययन किया था और मानव जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने का पूरा-पूरा प्रयास किया था, ताकि जीवन में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने आकाशीय पिण्डो के अध्ययन के दौरान देखा, कि चन्द्रमा अपनी कक्षा पर ५° झुककर पृथ्वी की सतत परिक्रमा करता है एवम् पृथ्वी भी २३ १/२° अपनी कक्षा पर झुकी हुई सूर्य की परिक्रमा निरन्तर करती रहती है। इसी प्रकार सभी ग्रह भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा सूर्य भी आकाश गंगा के केन्द्र की २२½ करोड वर्ष में एक परिक्रमा करता है और हमारी आकाश गगा के एक खरब से भी अधिक सूर्य निरन्तर केन्द्र का चक्कर लगाते है। भाव वह निकला, कि हर छोटा ज्योति पिण्ड अपने से बडे ज्योति पिण्ड की सतत परिक्रमा करता है वह भी विनम्रता पूर्वक (झुककर)। इसे यदि साहित्य की भाषा मे कहें तो यह कह सकते है, कि प्रकृति में सर्वत्र सतत आरती हो रही, है।

प्रकृति की इसी क्रिया का अनुगमन करते हुए आरती करते समय भावना यह होनी चाहिए, कि आरती की ज्योति में आरती करने वाले की आत्मा उस परम-ज्योति ब्रह्म की आदर एवम् श्रद्धा पूर्वक परिक्रमा कर रहा है।

ऐसी भावना को सतत बनाए रखने से ईश्वर की अनुभूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आरती का विधान बनाया गया था।




# भगवान की आरती क्यों?

निर्मला गुप्ता

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति का बड़ी गहरायी से अध्ययन किया था और मानव जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने का पूरा-पूरा प्रयास किया था, ताकि जीवन में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के दौरान देखा, कि चन्द्रमा अपनी कक्षा पर ५° झुककर पृथ्वी की सतत परिक्रमा करता है एवम् पृथ्वी भी २३ १/२° अपनी कक्षा पर झुकी हुई सूर्य की परिक्रमा निरन्तर करती रहती है। इसी प्रकार समी ग्रह भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा सूर्य भी आकाश गंगा के केन्द्र की २२½ करोड़ वर्ष में एक परिक्रमा करता है और हमारी आकाश गंगा के एक खरब से भी अधिक सूर्य निरन्तर केन्द्र का चक्कर लगाते हैं। भाव वह निकला, कि हर छोटा ज्योति पिण्ड अपने से बड़े ज्योति पिण्ड की सतत परिक्रमा करता है वह भी विनम्रता पूर्वक (झुककर)। इसे यदि साहित्य की भाषा में कहें तो यह कह सकते है, कि प्रकृति में सर्वत्र सतत आरती हो रही है।

प्रकृति की इसी क्रिया का अनुगमन करते हुए आरती करते समय भावना यह होनी चाहिए, कि आरती की ज्योति में आरती करने वाले की आत्मा उस परम-ज्योति ब्रह्म की आदर एवम् श्रद्धा पूर्वक परिक्रमा कर रहा है।

ऐसी भावना को सतत बनाए रखने से ईश्वर की अनुभूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आरती का विधान बनाया गया था।

2 Niti, March, 1999



# भगवान की आरती क्यों?

निर्मला गुप्ता

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति का बड़ी गहरायी से अध्ययन किया था और मानव जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने का पूरा-पूरा प्रयास किया था, ताकि जीवन में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के दौरान देखा, कि चन्द्रमा अपनी कक्षा पर ५° झुककर पृथ्वी की सतत परिक्रमा करता है एवम् पृथ्वी भी २३ १/२° अपनी कक्षा पर झुकी हुई सूर्य की परिक्रमा निरन्तर करती रहती है। इसी प्रकार सभी ग्रह भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा सूर्य भी आकाश गंगा के केन्द्र की २२½ करोड़ वर्ष में एक परिक्रमा करता है और हमारी आकाश गंगा के एक खरब से भी अधिक सूर्य निरन्तर केन्द्र का चक्कर लगाते हैं। भाव वह निकला, कि हर छोटा ज्योति पिण्ड अपने से बड़े ज्योति पिण्ड की सतत परिक्रमा करता है वह भी विनम्रता पूर्वक (झुककर)। इसे यदि साहित्य की भाषा में कहें तो यह कह सकते है, कि प्रकृति में सर्वत्र सतत आरती हो रही है।

प्रकृति की इसी क्रिया का अनुगमन करते हुए आरती करते समय भावना यह होनी चाहिए, कि आरती की ज्योति में आरती करने वाले की आत्मा उस परम-ज्योति ब्रह्म की आदर एवम् श्रद्धा पूर्वक परिक्रमा कर रहा है।

ऐसी भावना को सतत बनाए रखने से ईश्वर की अनुभूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आरती का विधान बनाया गया था।

2 Niti, March, 1999

# भगवान की आरती क्यों?

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति का बड़ी गहराई से अध्ययन किया था और मानव जीवन को प्रकृति के अनुरूप ढालने का पूरा-पूरा प्रयास किया था, ताकि जीवन में सुख और शान्ति बनी रहे। उन्होंने आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के दौरान देखा, कि चन्द्रमा अपनी कक्षा पर 5° झुककर पृथ्वी की सतत परिक्रमा करता है एवम् पृथ्वी भी 23½° अपनी कक्षा पर झुकी हुई सूर्य की परिक्रमा निरन्तर करती रहती है। इसी प्रकार सभी ग्रह भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा सूर्य भी आकाशगंगा के केन्द्र की 22½ करोड़ वर्ष में एक परिक्रमा करता है और हमारी आकाशगंगा के एक खरब से अधिक सूर्य निरन्तर केन्द्र का चक्कर लगाते हैं। भाव यह निकला, कि हर छोटा ज्योति पिण्ड अपने से बड़े ज्योति पिण्ड की सतत परिक्रमा करता है वह भी विनम्रता पूर्वक (झुककर)। इसे यदि साहित्य की भाषा में कहें तो यह कह सकते हैं, कि प्रकृति में सर्वत्र सतत आरती हो रही है।

प्रकृति की इसी क्रिया का अनुगमन करते हुए आरती करते समय भावना यह होनी चाहिए, कि आरती की ज्योति में आरती करने वाले की आत्मा, उस परम ज्योति ब्रह्म की आदर एवम् श्रद्धा पूर्वक परिक्रमा कर रहा है।

ऐसी भावना को सतत बनाए रखने से ईश्वर की अनुभूति सुगमता से हो सकती है। इसीलिए मन्दिरों में आरती का विधान बनाया गया था।

निर्मला गुप्ता
बी-340 लोक विहार
पीतम पुरा दिल्ली-34